'पृथ्वीपुत्रक वैशिष्ट्य'

B.A.-I

2nd Paper

कथाकार श्री ललितेश मिश्र 'ललित'क जन्म 09 अप्रैल 1936 कए एक गोट निम्न मध्यमवर्गीय कृषक ब्राह्मण परिवार मे भेलनि। किशोरावस्थाक कोनो टा पहल साहित्य मे चर्चित नहि अछि। मात्र एतेक जे कॉलेजक जे अध्ययन हिनक कलकत्ता मे चलैत छलनि से गड़बड़ा जएबाक कारणे दरभंगा मे सम्पन्न भेलनि। जीविकाक हेतु अध्यापनो करैलनि आ तकर बाद सरकारक राजपत्रित सेवा मे सम्मिलित भेलाह।

ललित प्राचीन संस्कारक प्रति मोहग्रस्त नहि रहि सामाजिक आ आनुवंशिक परम्पराक निर्वाह निरन्तर करैत रहलाह। परम्परा अनुरूपे बियाहो कयलनि आ सहज रूप सँ कएल गेल प्रेम आ ओकर कथाके सम्मादित गुप्त राखबाक हेतु विवश रहलाह। सामाजिक स्तर पर सम्बन्ध कैं प्रकट रूपें जोड़बाक अपना दिस सँ कोनो टा चेष्टा नहि कयलनि। साहित्य मे कहियो मतवादक स्थापना वा गुट बनएबाक चेष्टा मे क्षणो भरिक हेतु तत्पर नहि भेलाह आ तैं प्रो० रमानाथ झा सन समालोचक द्वारा समादृत भेलाह। ललितक वैयक्तिक परिवेश एक गोट सामान्य आ सुसंस्कृत मैथिल ब्राह्मणक छलन्हि जे अभ्यास, संस्कार आ प्रतिभाक कारणे युगाक अनुकूल बसात पाबि साहित्यिक क्षेत्र मे हिनका विशिष्ट बनौलक। अभ्यास, संस्कार

आ प्रतिभाक सामंजस्यक है फल थिक जे ललित के मात्र ललित बनौलक दोसर किछु नहि। हुनक ललितक रचनात्मक विशिष्टता रहैत अछि आ रचनात्मक विकासक अवरोध सेहो। ललित अपन सीमा सँ नीक जकाँ परिचित छलाह आ जखन कोनो साहित्यकारके अपन सीमाक परिचिति भऽ जाइत अछि तऽ ओ अपना युगक श्रेष्ठतम साहित्यकार होइत अछि आ हुनक ललित संगे सेहो भेल।

सामाजिक पृष्ठभूमि —

ललितक जन्म मधुबनी जिलाक न्यूलिते लसँठ चानपुरा नामक गाममे भेलनि, सेहो रोटी आ दारी सँ जर्जर आ विहीन आ कुत्सित विकृत कृषक समाजक मध्य। ओहि समय मे अंध विश्वास, टोना-टापर, मिथ्या अहंकार तथा सामाजिक श्रेष्ठताक दुलिमालि सँ सम्पूर्ण समाज आक्रान्त आ विचलित छल। अँग्रेजी राज्य आ सामंतवादक गंध गाम-गाम मे पसरल छल।

एहि वातावरणक बीच सँ सारसपुरुक अपन मूडी अलगाकऽ ललित केँ अपन कथा मार्मिक स्पर्श करय पड़लनि। वस्तुतः ललित जाहि सम्पर्क संगे लेखन क्षेत्र मे आएल अछि आइयो बड़ल्लाह

ताहि सँ मैथिली साहित्यमे ओ गीत आनि स्कल जेकर प्रतीक्षा बहुतो दिन सँ छल।

ललित समाजक कोनो टा विडम्बना कें नकारलनि नहि, मुदा ओ अपन कला कें समाजक कला सँ पैघ बना लेलनि। हुनकर गाढ़ति समाज के सहज रूपें नव रूप प्रदान करैत छल। समाज मे जे किछु घटनाक्रम होइत रहैत छल, ओहिसँ ललितक गाढ़ति मे आओर परिपक्वता अबैत गेल। युगक बसात जेना-जेना समाजक गात-गातमे समाहित भ' जा रहल छल, ललित ओकर स्पंदन कें अपन रचनामे सहेजबाक तत्परता देखौलनि। ललित अपन कथा सभमे ओ नहि छथि जे ओ स्वयंमे छथि अपितु ओ अपन रचना सभमे ओहि रूपमे जीबैत छथि जाहि रूपमे कि ओ स्वयं कें गढ़ड चाहैत छथि वा जिनगीमे होमय चाहैत छथि।

कहल जाए त' ललित अपन रचनाकारी कें प्रत्येक रचनामे सामाजिक पृष्ठभूमिक अनुरूपें बदलि दैत छथि। अर्थात विकासक क्रमक अनुरूप ओहिमे कतहु आकस्मिकता वा चमत्कारक दर्शन नहि होइछ, जे किछु अछि ओ सामाजिक यथार्थक निकट अछि।

कथावस्तु –

ललितक 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास तत्कालीन पूर्णियाँ जिलाक फारबिसगंज क्षेत्रक कथा कहैत अछि। गामक नाम अछि बकुर बन्ना आ कथाक मुख्य भूमि अछि दुसध टोली। ई उपन्यास एक गोट सम्पूर्ण ग्राम्य जीवन आ ओकर घटना सभक उपस्थापन करैत अछि, मुदा प्रधान विशिष्टता अछि घटना सभक जड़िमे नुकाएल ओ घटना जे वर्तमान इतिहास आ युगधाराके देने थीक। ओ घटना अछि सर्वे अर्थात भूमि सुधारक नवीन प्रयास। जमीन जे जोतैत अछि, कानूनमे ओकरे कब्जा मानल जाइत छै। शोषित आ उत्पीड़ित वर्गकें जखन एकर बोध होइत अछि तँ ओ अधिकार परबाक हेतु संघर्षक बाट पर उतरि जाइत अछि। अंततः विजय होइत अछि 'पृथ्वीपुत्रक' जे जमीन जोतैत अछि आ जे अपन घाम सँ ओकरा पटबैत अछि।

बकुर बन्नाक दुसध टोलीमे बिसेरवीक परिवार सभक चिन्हल जानल छैक। बिसेरवी पहिने नामी चोर रहैक। बादमे सरकारी समारोहमे सपथ खा कऽ आचरण कें सुधारि लेलक। बिसरवीकें दू टा बेटा छैक– गेनाई आ सरूप। अर्थात सरूपा आ गेनमा। सरूपा कें नवयुगक धाही लागि गेल छैक। नान्हियें टा सँ ओ अनटोटलक विरोधमे कसमसाइत रहैत अछि।

Scanned with CamScanner

बिसेखीक बेटीक नाम बिजली छैक। बियाहिता होइतहु बिजलीक सम्पर्क सटले टोलक एक गोट तीअ बिगाहा जोतय बला मध्यमवर्गीय किसान आ सुन्दर सँतल विधुर युवक कलपू मिसरक संग रहैत अछि। जे दिनानुदिन आओर बेसी ओझरायल चलि जाइत छै। बिजलीकेँ एहि प्रेम पर गर्व होइत अछि आ कलपू मिसरकेँ संतोष। एहि प्रेममे फूल लगौत तऽ नहि देखबामे अबैत अछि, मुदा तुलसीक पात जकाँ कलपू आ बिजलीक प्रेम समक लोल संदेहास्पद तऽ महसूस जाइत अछि।

बिसेखीक घरमे एकटा पुतोहु सेहो छैक - जेठ बेटाक बहु बेनी। एहि बेनीक सीमा आ संसार ई परिवारे भऽ गेल छै। गेनमाक जीबितो आ ओकर मुइलाक बादो। जमीनक संघर्षमे जखन गेनमाक मृत्यु भऽ जाइत अछि तऽ बेनी अपन घरवलाक फोटोकेँ अंकित कऽ बैसैत अछि।

ओना तऽ कथाक अंत नवीन उत्साह, विचार आ प्रेरणाक संग होइत अछि मुदा एहि कथा यात्रामे कतेको दुखान्त घटना सेहो होइत अछि। बिजलीक बियाह असफल सिद्ध होइत अछि। ओकरा रेलवेमे पैटमैनक काज करैत अपन घरवलाक अत्याचार सहन करऽ पड़ैछ। नारी शोषण समाजक सभ वर्ग कोन तरहेँ करैत अछि ओकर स्पष्ट रूप बिजलीक जीवनसँ देखबामे अबैत अछि। पुरुष आ स्त्रीक सम्बन्धक नियामक सेहो समाजे बनैत अछि आ एहि हेतु बैसबैत अछि रेलवेक पैटमैन

हीरालाल पंचौली। मुदा एतहु नव सामाजिक नैतिकता आ निनाग कें जनमैत देखल जा सकैत अछि, तें बिजली पैंह मैनक पाशविकता सँ मुक्त होएबा मे सफल भेल।

तथापि जे सहज आ स्वाभाविक अछि, ओहो समाजिक तराजू पर मान्य नहि रहने लोकक दृष्टिमे अपलाइ बनि जाइत अछि। कलपु आ बिजलीक प्रेम कें लोक नैतिक नहि अनैतिक बुझैत अछि। एहि सँ उत्साहित भए गाममे आएल पुलिसक सिपाही दुरजोधन सिंह मुखाएल बाघ जकाँ बिजली पर टूटैत अछि आ प्रतिकारक क्रममे मारल जाइत अछि। ~~सिपाही~~ बहिनक लाज बचएबाक लेल सरूपा भरोस सँ सिपाहीकें कुट्टी-कुट्टी काटि दैत अछि। मुदा पुत्र मोहक कारणे बिसेरनी एहि हत्याक जिम्मा अपना उपर लए लैत अछि। आ वर्तमान न्याय व्यवस्था एहन रहैत अछि जे परिस्थिति आ प्रसंगाक साक्ष्य आ बिजलीक स्वीकारोक्ति कें नहि मानि वर्ग चरित्र आ सामाजिक किंवदन्ती कें सत्य मानैत अछि। तथा बिसेरनीकें आजन्म कारावासक दण्ड सुना देल जाइत छैक। बिसेरनीक मृत्यु जेले मे भए जाइत अछि।

उपन्यासक दोसर पक्षमे नव सामाजिक विधान आ कानून प्रणालीक अवहेलना करबा सँ एखनो धरि बनिर सामंती वर्ग नहि चुकैत अछि। जाहि जमीन पर कानून जोतदारक कब्जा मानैत छैक, ओहि जमीनक फाजिल सामंत सरदार जंग

बहादुर सिंह बरबाक हेतु ईर्ष्यी भऽजैत छथि, मुदा कोनहु टा शस्त्र सँ तेज होइत अछि समाजक चेतना आ नवीन मान्यता। बबुरबन्नाक दुसाध टोली एहि सामंती व्योटेक प्रतिरोधक कारबाक निर्णय लैत अछि आ एहि क्रममे न्याय युद्ध करैत अपन प्राण गमबैत अछि गेनमा। परिणामतः जोतदार सभ जीतैत अछि आ सामंत हारैत अछि।

एहि उपन्यासमे समाजक किछु एहन नव तथ्य मुखरित भेल अछि, जे समाज जागृतिक परिणामक रूपमे देखल जा सकैत अछि। बबुर-बन्ना गाममे तीन टा यादवबन्धु लोकनिक छल। बेस सुविज्ञगर आ नमहर भू-स्वामी। जमीनदार आ शोषित वर्गक संघर्षमे ई लोकनि तटस्थ रहैत अछि, किएक तँ दुनू मंडलक भिन्न-भिन्न रीति भिन्न-भिन्न आ अपनामे डूबल रहबाक निरंतर प्रयास कारण छल। किन्तु पृथक-पृथक स्वार्थ बोध रहितहुँ आ मालिक दिससँ एकताके तोड़बाक प्रयास होइतहुँ समान्त टोलीक लोक संघर्षक मोर्चा पर एक भऽ जाइत अछि। एहितरह उपन्यासकार बिनु किछु कहनहुँ वर्ग चेतनाक संग वर्ग चेतनाक वृद्धि कें सहजे स्पष्ट कऽ दैत अछि। मुदा ई जातीय समूह वाचकता नव विचार के लऽ कऽ चलल अछि तेँ अंततः विजयी होइत अछि आ एहि जातिगत मनोभाव आ संकीर्ण सीमाक मध्यमे विचार सन्निहित रहल अछि आ

अछि उत्पीड़ित वर्गक नेतृत्व क्रान्तिकारी विचार अर्थात् जमीन ककर जे जोतए ओकर।

एहि तरहें देखल जा सकैत अछि जे ललितक 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास स्वाभाविक प्रेम, मानवीय संवेदना, सामाजिक यथार्थ, नवीन युग चेतना, वर्गक आ वर्णक बनैत-बिगड़ैत नव-नव सम्बन्ध तथा नव समाजक आ नव मनुष्यक आत्मीय स्वरूप अभिव्यक्त करैत अछि। तेँ एहि उपन्यास केँ मात्र कोनो स्थान, किंवा विशेष कालक कथा नहि, अपितु नव युगक कथा मानबाक चाही।

डॉ० पंकज कुमार (अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर, (मधुबनी)

Scanned with CamScanner